विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग नवम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

ता:-०७/०९/२०२०(एन.सी.ई.आर.टी.पर आधारित)

पाठ:-नवम: पाठनाम जटायो: शौर्यम्

श्लोक६.

वृद्धोऽहं त्वं युवा धन्वी सरथ: कवची शरी ।

न चाप्यादाय कुशली वैदेहीं मे गमिष्यति ।।

अन्वय:- अहं वृद्ध: त्वं युवा ,धन्वी ,सरथ:, कवची, शरी, (चासि) ,

न च कुशली मे वैदेहीं आदाय अपि गमिष्यसि ।

शब्दार्था:-

वृद्ध:- बूढ़ा , अहम् – मैं , युवा – जवान (युवक)

धन्वी – धनुषधारी , सरथ: - रथ से युक्त ,मे -मेरे ,

कवची – कवच वाले , शरी – वाणों वाले ,आदाय -लेकर ,

कुशली – कुशलतापूर्वक , वैदेहीं - सीता को , गमिष्यसि – जाओगे

अर्थ –

मैं (तो) बूढ़ा हूं ,परंतु तुम युवक (जवान) हो ,धनुषधारी हो ,रथ से युक्त हो कवचधारी हो और वाण धारण किए हो ।तो भी मेरे रहते सीता को लेकर नहीं जा सकोगे ।